THE HERALD of Christian Science
informal translations from the publications of the Christian Science Publishing Society

समुद्री पक्षी का ओझल हो जाना
The passing of the sea gull

Author – Louise Wheatley Cook Hovnanian

Christian Science Sentinel Volume 115, Issue 42, October 21, 2013

हम इस लेख को साँझा करके खुश हैं जो मूल रूप में अप्रैल 4, 1927 के दि क्रिश्चियन साँयस मानीटर के अंक में प्रकाशित हुआ था।

दो औरतें समुद्री जहाज के डैक पर ऐसी सौम्य सतुंष्ट करने वाली खामोशी में बैठी थी जो केवल सच्चे मित्र ही समझ सकते हैं। उनमें से एक ने हाल ही में एक प्रियजन के निधन का अनुभव किया था जो उसे अपने जीवन की सब से बड़ी दुर्घटना प्रतीत हो रही थी, और उसके हृदय में अभी भी पीड़ा थी जिसे उसकी मित्र जीवन* तथा अनश्वरता के बारे में मृदु, सांत्वना देने वाले आश्वासनों के साथ शांत करने का प्रयास कर रही थी। वह जो सुन रही थी, शांतिपूर्वक बैठ गई, बंधें हाथ, उसे ग्रहण करने की कोशिश करते हुए जो अभी–अभी कहा गया था, और साथ ही उसी समय फुर्सत में मस्तूल पर समुद्री पक्षियों की खेलते हुए देखते हुए जैसे ही जहाज ने अठखेलियां खाते पानी में रास्ता बनाया। उस समय उस ने ध्यान दिया कि पक्षियों में से एक ने दूसरों को छोड़ दिया था, निंरतर उच्चतर और उच्चतर चक्कर लगाते हुए, जब तक कि यह स्पष्ट नहीं हो गया कि उसने अपने आप को दूसरों से पूरी तरह अलग कर लिया था और जहाज से एकदम विपरीत दिशा में जा रहा था । निरंतर वह स्थिरता से, दृढ़ता से उड़ता गया, अपने मजबूत सफेद पंख फैलाए हुए, जब तक कि वह आकाश में केवल एक धब्बे के समान नहीं रह गया और अंततः वह पूर्णतः नजरों से ओझल हो गया।

क्या समुद्री पक्षी कहीं चला गया है? शांति से देखने वाली ने सोचा, जो कि अभी तक क्रिश्चियन साँयस की शिक्षाओं के उन सांत्वना भरे शब्दों पर विचार कर रही थी जो कि उस ने मृत्यु क्या है, के बारे में अभी–अभी सुने थे। क्या वह सुन्दर क्रिया समाप्त हो चुकी थी? क्या इसे अभी भी जीवन, और सार्मथ्य, और शक्ति तथा वह सब जो उसके पास था, के साथ नहीं पहचाना जा सकता था, जब वह उसकी नज़रों से ओझल हो गया था? क्या कुछ रुक गया था? वह अचानक अपनी कुर्सी पर बैठ गई और दूर नीले क्षितिज़ को लगभग विस्मयचकित होकर एकटक देखने लगी, तभी उसकी चेतना में एक अवर्णनीय शांति प्रवाहित हुई जिसे उसने कई थका देने वाले महीनों में पहली बार महसूस किया था। अब उसने उस में सच्चाई देखी जो उसकी मित्र उसे बता रही थी तथा इससे पहले कभी भी ऐसा महसूस नहीं किया कि जो कुछ उसके अनुभव में घटा था बिल्कुल उसी तरह ही था जैसे समुद्री पक्षी का उसकी दृष्टि के सामान्य क्षेत्र से परे चले जानाः वह अभी भी उड़ता जा रहा था, चाहे उसकी दृष्टि की सीमित, इन्सानी समझ अब उसका पीछा नहीं कर सकती थी।

---

* जो शब्द बड़े अक्षरों में लिखे गये हैं वह परमेश्वर के समानार्थक शब्द हैं।

For this translation in English and other translations in [Hindi], please see http://translations.christianscience.com

Translation © 2014 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.

यदि मैं कुछ और दूर देख सकती, उसने सोचा। और एकदम यही क्रिश्चियन साँयस हमें करने में सक्षम बनाती है–कुछ और दूर देख पाने में, या दूसरे शब्दों में, नश्वर समझ से छुपी हुई महान् वास्तविकताओं में से कुछ को ज्यादा स्पष्ट रूप से समझ पाने में। जैसे कोई सत्य की ज्यादा समझ को प्राप्त करता है जैसा मेरी बेकर ऐडी (क्रिश्चियन साँयस की खोजकर्ती तथा संस्थापिका), द्वारा क्रिश्चियन साँयस की पुस्तक, साँयस ऍंड हैल्थ विद की टू स्क्रिपचर्स में दिया गया है, वह पाता है कि उसका आध्यात्मिक दृष्टिकोण विस्तृत हो जाता है जैसे ही वह परमेश्वर की एक बेहतर समझ तथा मानव के उस के साथ संबध में प्रतिदिन विकास करता है। जैसे ही वह इस सरल, व्यवहारिक, नए–पुराने धर्म के अध्ययन तथा विचार–विमर्श को जारी रखता है–नए सुअवसरों के साथ हर सुबह की तरह नया, गैलीलियन चोटियों की तरह पुराना, जिसके बीच क्राइस्ट जीसस चले और सिखाया–वह पाता है कि इसमें केवल बीमार के लिए उपचार तथा पापी के लिए उद्धार ही नहीं अपितु दुखियों के लिए सांत्वना भी है। वह देखता है कि चाहे उसका समुद्री पक्षी अपनी अग्रसर उड़ान में वापिस न आए, उसका जाना अब दुःखदायी नहीं रहा, और यशायाह के शब्द एक बार फिर आश्चर्यजनक रूप से परिपूर्ण हुए है, ‘‘ उसने मुझे टूटे हुए हृदयों को जोड़ने के लिए भेजा है . . . और ज़्योन में विलाप करने वालों को राख के बदले माला, शोक के बदले में हर्ष का तेल और निराशा के बदले स्तुति की ओढ़नी प्रदान करूँ’’ (यशायाह 61:1, 3)

जैसे ही कोई दुख के उदासीन आवरण जिसमें उसने खुद को लपेटा हुआ है, को उतार फैंकता है और सत्य की धूप की गर्माहट में बाहर कदम रखता है, वह पाता है कि उसके अनुभव ने उसके प्रियजन को उसके लिए कम प्रिय नहीं कर दिया, अपितु, वास्तव में और प्रिय बना दिया है, क्योंकि उस ने उस सर्वव्यापी दिव्य प्रेम में से कुछ सीख लिया है जो अपने आप को उन तक सीमित नहीं करता जो पहले हमें प्रेम करते हैं अपितु समस्त इन्सानियत को अपने आलिंगन में थामे रखता है। वह अब अंधकार में ‘ओझल हुए हाथ के स्पर्श’ को पाने के लिए नहीं रोता अपितु अपने स्वंय से बाहर निकलता है जीवन की डगर पर दूसरों को सुख देने तथा आशीषित करने के लिए जिनका रास्ता, भी उस क्षण अन्धकारमय है, तथा उनको शांति के बारे में बताने के लिए जो परमेश्वर के सारे बच्चों के लिए है, वह शांति जिसे न तो संसार कभी दे सकता है और न ही ले सकता है। तब वह साँयस ऍड हैल्थ मे लिखित उस कथन को प्रमाणित करता है: ‘‘पृथ्वी के सर्द झोंकें चाहत के फूलों को भले ही जड़ से उखाड़ फैंके, और उसे हवाओं में बिखेर दें, परन्तु दैहिक बन्धनों का यह विच्छेद, सोच को परमेश्वर से और अधिक जोड़ देता है, क्योंकि प्रेम संघर्ष कर रहे हृदय को तब तक सहारा देता है जब तक यह संसार पर आहें भरता बंद नहीं कर देता तथा आकाश के लिए अपने पंखों को फैलाना शुरू नहीं कर लेता’’ (पृष्ठ 57)।

आओ हम उनके बारे में सही ढ़ंग से सोचें जो उस नीले क्षितिज के पार चले गए है।

आओ हम उन के बारे में सही ढ़ंग से सोचें जो उस नीले क्षितिज के पार चले गए हैं। वे वास्तविक रूप में उस दिव्य जीवन के साथ पूर्णतः एकरुप हैं जिसे अंत का पता नही क्योंकि उसे आदि का भी नहीं पता। आओ हम उन्हें किसी अन्य वस्तु के साथ जुड़ा हुआ न सोचें परन्तु अपने हृदयों में उद्घोषित करें जो बहुत समय पहले शूनामाइट स्त्री ने कहा था जब एलिशा के नौकर ने उसके पुत्र के बारे में पूछा था जिसे संसार ने मृत कहा; उस प्रश्न के उत्तर में ‘‘क्या बच्चा ठीक है?’’ उसने उत्तर दिया, ‘‘ठीक है’’ (II राजा 4:26)।

Translation © 2014 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.